



## चित्र क्रीड़ी.

पांच

रजा

(जन्म १९२२)

मध्यप्रदेश के बाबरिया में जन्म हुआ था सैयद. हुंजर रजा का और बचपन बीता घने जंगलों में. रजा को आज भी याद है, रात की साँफनाक लारीकी की रहस्यमयता किस तरह सुबह होने ही लगाना. रंगों से भर जाती थी. वही घमकदार और खुलाना रंग और प्रकृति का स्वच्छंद और आसन्नता. रजा आकर्षण उसके ध्वन्याचरों (लेक्चरों) को जानते हैं. मुद्राचित्रकार के रूप में प्रसिद्ध रजा को शिक्षा नागपुर, बंबई और पेरिस में हुई. फ्रांस जाने से पहले (१९५०) वह कई एकल प्रदर्शनों कर चुका था और उसके अलरंगों से बने ध्वन्याचरों का एक स्थान बन चुका था. अलरंगों के प्रयोग के पीछे उसका तर्क यह है कि वे अस्त, सहज और धातु-ध्वनियों के अंकन की उपाय संभावनाएं लिये हुए होते हैं. उसके चित्रों में धारा-आकृतियां या तो होती ही नहीं, या प्रमुख नहीं होती. वह वही ध्वन्याचित्र करता है, जिसमें जिववी हो और जो हृदय को काटी छू सके. एक बार किसी ने उसे सुझाया कि रजा को पुनः राजमहल बहुत अच्छा विषय होगा. रजा उसकी चारों तरफ घूमघाम आया फिर बोला कि इस बेजाय मस्तरों-चूने के आकार में क्या बसा है और बाव में रास्ते में पड़नेवाली एक भंगी बस्ती का चित्र बना कर वह लौट आया. अब वह अपनी चित्रकार पत्नी जैनिन के साथ स्थायी रूप से पेरिस में बस चुका है और वहां दोनों के अलग-अलग स्टूडियो हैं. क्योंकि वह पेट करते बस्त किसी की उपस्थिति अरदासत नहीं कर सकते— संगीत का स्वर भी नहीं.

मलाबार हिल से बोपाटी का यह ध्वन्याचर रजा ने उन्हीं दिनों बनाया था, जब वह बंबई में जे. जे. मेयवता का और १९४७ में हुई उसकी एकल प्रदर्शनी का सर्वोत्तम चित्र माना गया था. इसका चित्र उसका नया चित्र है, एक प्लाटो गांव का, जो इस समय भी मेरेन के निजी संग्रह में है. दोनों चित्र उसकी कला-यात्रा के दो सोपान वस्तुतः करते हैं.

